17 जुलाई 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 8 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अमेरिका में अपूर्व धर्मप्रभावना

(1) शिकागो : यहाँ दिनांक 8 से 13 जून तक **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा 'योग और ध्यान' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 21 से 28 जून तक **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** द्वारा पंचलब्धि एवं रहस्यपूर्ण चिट्ठी विषय पर एवं दिनांक 4 से 9 जून तक **पण्डित विपिनजी शास्त्री** द्वारा पुरुषार्थसिद्धिउपाय विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि यहाँ मंदिर स्थापना के 26वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर विशाल हॉल में डॉ.संजीवकुमारजी गोधा के विशेष व्याख्यान हुए। जिसे लगभग 1000 लोगों ने सुना व सराहा।

(2) न्यूजर्सी : यहाँ दिनांक 14 से 19 जून तक **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा 'आत्मानुभव' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 31 मई से 5 जून तक **डॉ. संजीवजी गोधा** द्वारा ईश्वर अकर्तृत्व एवं जगत का स्वतंत्र परिणमन विषय पर एवं दिनांक 23 से 27 जून तक **पण्डित विपिनजी शास्त्री** द्वारा 'मैं कौन हूँ, भगवान कौन हैं, मैं भगवान कैसे बन सकता हूँ' आदि विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(3) डलास : यहाँ दिनांक 21 से 27 जून तक **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा 'सहजता' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 14 से 20 जून तक **डॉ. संजीवजी गोधा** द्वारा प्रतिदिन प्रात: योगसार एवं सायंकाल निश्चय-व्यवहार के भेद-प्रभेद व प्रयोग विधि की मार्मिक चर्चा हुई। दिनांक 10 से 16 जून तक **पण्डित विपिनजी शास्त्री** द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक (व्यवहाराभासी) व समयसार (कलश-138) पर प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि यहाँ डॉ. संजीवजी व पण्डित विपिनजी के सान्निध्य में 2 दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें प्रवचन, कक्षाओं, भक्ति के अतिरिक्त डॉ. भारिल्लजी द्वारा लिखित द्रव्यसंग्रह विधान का भी आयोजन हुआ।

(4) मयामी : यहाँ दिनांक 6 से 13 जून तक **डॉ. संजीवजी गोधा** द्वारा प्रतिदिन प्रात: समयसार गाथा-6 पर एवं रात्रि में तत्त्वार्थसूत्र के अध्याय 5 व 6 पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही श्रुतपंचमी विधान भी हुआ।

(5) क्लीवलैण्ड : यहाँ दिनांक 17 से 22 जून तक **पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर** द्वारा छहढाला पर प्रवचन हुये।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की -

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वाग्पटुता हेतु साप्ताहिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। साप्ताहिक गोष्ठियों का उद्घाटन समारोह दिनांक 3 जुलाई को आयोजित किया गया, जिसके अन्तर्गत **'हम और हमारा महाविद्यालय'** विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा व पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ थे। इसके अतिरिक्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', श्रीमती कमला भारिल्ल, जिनकुमारजी शास्त्री, गौरवजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री आदि महानुभाव उपस्थित थे। साथ ही दैनिक सभा के श्रोतागण व महाविद्यालय के सभी विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

गोष्ठी का संचालन समर्थ जैन व विनय जैन ने किया तथा आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 7 जुलाई को **'देव-शास्त्र-गुरु : एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री ताराचंदजी सौगानी, मुख्य अतिथि श्रीमती शकुन्तला बैराठिया एवं निर्णायक के रूप में श्रीमती कमला भारिल्ल उपस्थित थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अक्षत जैन, निम्बाहेड़ा (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं संयम देशमाने, बीड (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण निखिल जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अभिषेक जैन केरवना व निखिल जैन फिरोजाबाद ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

अष्टाह्निका पर्व सानन्द संपन्न

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ नवरंगपुरा में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में शंका-समाधान एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक (द्वितीय अध्याय) पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही विदुषी श्रुति जैन ने दोपहर में महिलाओं की विशेष कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा ली। प्रवचनोपरांत प्रश्नमंच का भी आयोजन किया गया। **- अजितभाई मेहता (अध्यक्ष-नवरंगपुरा समाज), अहमदाबाद**

सम्पादकीय –

पंचकल्याणक : पाषाण से परमात्मा बनने की प्रक्रिया

1

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

भरतक्षेत्र के प्रत्येक तीर्थंकर के जीवन में जो पाँच कल्याणकारी, दिव्य सातिशय और अनुपम घटनायें घटती हैं, उन्हें ही पंचकल्याणक कहते हैं।

'पंच' शब्द तो मात्र पाँच संख्या का सूचक है और कल्याणक का अर्थ है **कल्याणकारी मंगलमय महोत्सव।** अथवा-वैराग्यवर्द्धक, वीतरागता के पोषक, आत्मानुभूति में निमित्तभूत प्रेरणा-प्रद-पावन प्रसंग। ये पंचकल्याणक भव्य जीवों को संसार सागर से पार होने में निमित्त बनते हैं। इनके नाम हैं – गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक।

जिनागम के अनुसार ये पंचकल्याणक तीर्थंकरों के ही होते हैं और 'तीर्थंकर' का अर्थ होता है – **जो जगत के जीवों को जन्म-मरण और आधि-व्याधि-उपाधि के असह्य दुःखों के भव सागर से तारने में नौका के समान निमित्त हों।**

जो जीव पूर्व जन्म में विश्वकल्याण की भावना भाता है, समस्त संसारी जीवों के प्रति वात्सल्य भाव रखता है, उन्हें सम्पूर्ण रूप से सुखी देखना चाहता है, जिनके हृदय में निष्प्रयोजन करुणा होती है, जो सबकी मंगल कामना करता है, उन्हें 'तीर्थंकर' नामक ऐसे सातिशय पुण्य कर्म का बन्ध होता है, जिसके फल में वह परमोत्कृष्ट, जगत पूज्य, सौ-सौ इन्द्रों द्वारा वंदनीय 'तीर्थंकर' पद को प्राप्त करता है।

जब उस तीर्थंकर पद को पाने वाला जीव 'माँ' के गर्भ में आता है तो गर्भ में आने के छह माह पूर्व से जन्म होने तक अर्थात् पन्द्रह माह तक इन्द्र की आज्ञा से धन-कुबेर द्वारा प्रतिदिन तीन बार साढ़े तीन करोड़ रत्नों की वर्षा होती है। दिग् कुमारी देवियों द्वारा तीर्थंकर की माता की परिचर्चा एवं गर्भशोधन की क्रिया होती है। तीर्थंकर का जीव जब गर्भ में आने वाला होता है, उसके एक दिन पूर्व तीर्थंकर की माता को सोलह शुभ स्वप्न दिखाई देते हैं। माता प्रातः उठकर राजदरबार में जाकर उन स्वप्नों का फल अपने पति से पूछती हैं। पति उन्हें स्वप्नों का फल बताते हैं, जिसे ज्ञातकर माता तो अति हर्षित होतीं ही हैं, राजदरबार में उपस्थित समस्त प्रजाजन एवं इन्द्र और देवगण भी हर्षित होकर जोर-शोर से गर्भ कल्याण का मंगल महोत्सव मनाते हैं।

जब तीर्थंकर का जन्म होता है, तब तीनों लोकों में हर्ष का वातावरण छा जाता है। चौबीसों घंटे नरक की यातनायें भोगने वाले नारकी जीवों को भी एक क्षण के लिए सुख-शान्ति का अनुभव होता है। भव्य जीवों के तो मानों भाग्य ही खुल जाते हैं। इन्द्रों का आसन कंपायमान होता है, इससे उन्हें ज्ञात होता है कि तीर्थंकर का जन्म हो गया है। वे तुरंत सदल-बल तीर्थंकर के जीव का जन्म कल्याणक मनाने के लिए चल पड़ते हैं। इन्द्राणी प्रसूतिगृह में जाकर माता के पास मायामयी बालक सुलाकर बाल-तीर्थंकर को जन्माभिषेक के लिए सौधर्म इन्द्र को सौंपती है। सौधर्म इन्द्र बाल तीर्थंकर को ऐरावत हाथी पर बिठाकर देव समूह के साथ सुमेरु पर्वत पर ले जाते हैं। वहाँ उनका क्षीर सागर के पवित्र जीव-जन्तुरहित प्रासुक जल से अभिषेक करते हैं। उन जैसा महोत्सव मनाना तो आज हमारे लिए असंभव ही है; फिर अपनी शक्ति और भक्ति के अनुसार हम भी इन पंच कल्याणक उत्सवों में साधर्मीजनों में से ही इन्द्रों की प्रतिष्ठा करके जन्म कल्याणक को सर्वाधिक उत्साह से मनाते हैं।

यहाँ कोई पूछ सकता है कि गर्भ और जन्म तो सभी जीवों के होते हैं; फिर मात्र तीर्थंकरों के ही ये दोनों उत्सव इन्द्रों द्वारा कल्याणक के रूप में क्यों मनाये जाते हैं? हमारे तुम्हारे क्यों नहीं?

समाधान यह है कि – यद्यपि गर्भ में आना और जन्म लेना कोई नई बात नहीं हैं, बड़ी बात भी नहीं है; बल्कि ये दुःखद ही होते हैं; किन्तु जिस गर्भ के बाद पुनः किसी माँ के गर्भ में न जाना पड़े, जिस जन्म के बाद किसी के उदर से पुनः जन्म न लेना पड़े। जिस गर्भ एवं जन्म में जन्म-मरण का अभाव होकर मुक्ति की प्राप्त हो, वह गर्भ और जन्म कल्याण स्वरूप होने से कल्याणक के रूप में मनाये जाते हैं। तीर्थंकर का जीव अब पुनः गर्भ में नहीं आयेगा, पुनः

जन्म भी नहीं लेगा; अतः उसका ही गर्भ-जन्म कल्याण के रूप में मनाया जाता रहा है, मनाया जाता रहेगा।

यद्यपि 'तीर्थंकर' नामक पुण्य प्रकृति का उदय-अरहंत अवस्था में केवलज्ञान होने पर तेरहवें गुणस्थान में आता है, तथापि उस तीर्थंकर प्रकृति के साथ ऐसा सातिशय पुण्य भी बँधता है, जिसके फलस्वरूप गर्भ, जन्म, तप कल्याणक के मंगल महोत्सव मनाये जाते हैं। तीर्थंकर प्रकृति के फल में उनकी वाणी में ऐसी सातिशय सामर्थ्य प्रगट होती है कि उनकी निरक्षरी वाणी **(दिव्यध्वनि)** को श्रोता अपनी-अपनी भाषा में समझ लेते हैं।

तीर्थंकर जन्म से ही मति-श्रुति एवं अवधिज्ञान के धारी होते हैं। वे क्षायिक सम्यग्दृष्टि भी जन्म से ही होते हैं; अतः संसार, शरीर और भोगों की क्षण भँगुरता और असारता से भी भली-भाँति परिचित होते ही हैं; फिर भी अनेक तीर्थंकर तो बहुत लम्बे समय तक घर-गृहस्थी में रहकर राज-काज करते रहे। इसी वर्तमान चौबीसी के आद्य तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को ही देखो न! उनकी चौरासी लाख पूर्व की कुल आयु थी, जिसमें तेरासी लाख पूर्व तक तो राज्य ही करते रहे। न केवल राज्य करते रहे, बल्कि राज्य और परिवार के बीच रहकर लौकिक सुख भी भोगते रहे। नीलांजना का नृत्य देखते-देखते हुई उसकी मृत्यु ही तो उनके वैराग्य का निमित्त बनी थी न! शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ तो चक्रवर्ती पद के धारक भी थे, जिनके छह खण्ड की विभूति और छियानवें हजार रानियाँ थीं।

यद्यपि नीलांजना की मौत और जनता का स्वार्थीपना तो उनके वैराग्य का मात्र बाह्य-निमित्तकारण था, जो वस्तुतः अकिंचित्किर होता है। जबतक उपादान कारण में दीक्षा लेने की तत्समय की योग्यता न आई हो तब तक दीक्षा नहीं हो सकती थी। प्रत्येक कार्य अपने पाँच समवाय पूर्वक ही तो होता है, जिसमें पुरुषार्थ, होनहार एवं काललब्धि प्रमुख हैं। इनके सुमेल के बिना भी कोई कार्य निष्पन्न नहीं होता।

तीर्थंकर जब भी दीक्षा लेते हैं, स्वयं ही दीक्षित होते हैं। वे किसी से दीक्षा लेते भी नहीं है और किसी को दीक्षा देते भी नहीं हैं। वे दीक्षा लेते ही मुनि अवस्था में मौन से ही रहते हैं। उनका अधिकांश समय आत्मा में स्थिर होने हेतु अन्तर्मुखी पुरुषार्थ में ही व्यतीत होता है। **(क्रमशः)**

जाना (JAANA) शिविर सानन्द संपन्न

लॉस एंजिल्स : यहाँ जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका **(JAANA)** द्वारा आयोजित 20वाँ वार्षिक आध्यात्मिक शिविर डॉ. भारिल्ल आदि 6 विद्वानों के सान्निध्य में दिनांक 29 जून से 4 जुलाई तक सानन्द संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रतिदिन प्रात: डॉ. भारिल्लजी द्वारा लिखित अष्टपाहुड मण्डल विधान का आयोजन हुआ। साथ ही **डॉ. भारिल्ल** द्वारा 'योग और ध्यान' विषय पर, **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** द्वारा समयसार (कर्त्ताकर्म अधिकार) पर, **पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई** द्वारा समयसार (गाथा 6) पर एवं **पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर** द्वारा समयसार (गाथा 181-183) पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। इस वर्ष **JAANA** के विशेष आमंत्रण पर पधारे **श्री एस.पी. भारिल्ल** द्वारा 'मैं परमात्मा हूँ' व कण-कण की स्वतंत्रता' विषय पर अपनी विशेष शैली में व्याख्यान हुये। इस शिविर में अंतिम 2 दिन **डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली** द्वारा सारगर्भित व्याख्यान हुये।

बच्चों के लिये विशेष पाठशाला एवं उनके द्वारा कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। एक दिन विशेष भक्ति संध्या का आयोजन श्री पौरांगजी जैन एवं उनके सहयोगियों द्वारा हुआ, जिसमें प्राचीन भजनों की सुन्दर प्रस्तुति दी गई। आयोजन में पूरे अमेरिका के विविध नगरों से पधारे शताधिक साधर्मियों ने लगभग 50 घण्टे धर्म लाभ लिया।

5 दिवसीय संपूर्ण आयोजन **श्री अतुलभाई खारा** के कुशल निर्देशन में श्री अनिलभाई शाह के सहयोग से लॉस एंजिल्स जैन सेन्टर में संपन्न हुआ।

JAINA CONVENTION सानन्द संपन्न

लॉस एंजिल्स : संपूर्ण अमेरिका में जैन समुदाय के लिये प्रत्येक दो वर्ष में आयोजित होने वाला जैना कन्वेन्शन इस वर्ष लॉस एन्जिल्स में धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

दिनांक 4 से 7 जुलाई तक आयोजित इस समारोह में लगभग 5000 लोगों की उपस्थिति रही।

इस प्रसंग पर ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा 'स्वाध्याय एवं ध्यान' विषय पर विशेष व्याख्यान, **डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली** द्वारा 'जैन न्याय' एवं 'महावीराष्टक का अर्थ' पर तथा **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा 'जैन सिद्धांतों का दैनिक जीवन में उपयोग' तथा 'भेदविज्ञान' विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ भारी संख्या में उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

श्रुतपंचमी विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ मुल्तान दिगम्बर जैन मंदिर के स्थापना दिवस एवं श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 9 जून को पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली द्वारा रचित श्रुतपंचमी विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर द्वारा श्रुतपंचमी पर प्रवचन का लाभ मिला। समाज के अनेक साधर्मियों ने कार्यक्रम का लाभ लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं डॉ. ज्योति सेठी के सहयोग से संपन्न हुये। **- पंकज जैन**

पधारिये! अवश्य पधारिये!! !! श्री वीतरागाय नमः !! तत्वज्ञान का अपूर्व लाभ लीजिये!!

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

आमंत्रण पत्रिका

शुक्रवार, दिनांक 2 अगस्त 2019 से रविवार, दिनांक 11 अगस्त, 2019 तक

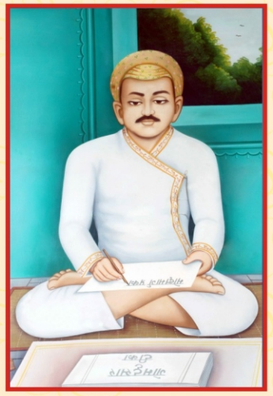

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की श्रृंखला का बयालीसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा शुक्रवार, दिनांक 2 अगस्त 2019 से रविवार, दिनांक 11 अगस्त, 2019 तक अनेक विशिष्ट मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर देश के गणमान्य श्रेष्ठी मुम्बई से सर्वश्री कांतिभाई मोटानी, दिलीपभाई शाह, नितिनभाई शाह, आई.एस. जैन, कैलाशजी छाबड़ा, अरुणजी दोंडल, संजयभाई कोठारी, निखिलभाई पारेख; दिल्ली से अजितप्रसादजी जैन, आदीशजी जैन, मंगलसेनजी जैन; कोलकाता से सुरेशजी पाटनी; सूरत से संजयजी दीवान, प्रकाशचंदजी छाबड़ा; ललितपुर से मुन्नालालजी, अनूपजी नजा; मेरठ से सौरभजी जैन, अजयजी जैन; सागर से सुनीलजी सर्राफ, सेठ गुलाबचंदजी जैन के अतिरिक्त अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, अशोकजी जैन (सुभाष ट्रांसपोर्ट) भोपाल, अजितभाई मेहता अहमदाबाद, पण्डित शिखरचंदजी जैन विदिशा, प्रमोदजी जैन बड़ौत, अनिलजी जैन एस.पी. जयपुर इत्यादि अनेक विशेष अतिथि पधार रहे हैं।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह

शुक्रवार, दिनांक 2 अगस्त 2019, प्रात: 8:00 बजे

ध्वजारोहणकर्त्ता: श्री निहालचंद जी जैन, जयपुर

अर्ह पाठशाला का विशेष कार्यक्रम

रविवार, दिनांक 4 अगस्त 2019

परमागम ऑनर्स (विचार गोष्ठी)

शनिवार, दिनांक 10 अगस्त 2019

विद्वत्समागम

- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर
- पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर
- ब्र.सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना
- ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर
- पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
- पण्डित शैलेषभाई, तलोद
- डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर
- डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर
- पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर
- डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, बांसवाड़ा
- डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई
- विदुषी स्वानुभूति जैन, मुम्बई

दैनिक कार्यक्रम

प्रात:	5.00 से 5.30	सुप्रभात मंगलगायन
	5.30 से 6.15	प्रौढकक्षा
	6.30 से 7.00	डॉ.भारिल्लजी के प्रवचन (जिनवाणी चैनल)
	7.00 से 7.20	गुरुदेवश्री के प्रवचन (अरहंत चैनल)
	7.30 से 8.30	पूजन
	9.00 से 9.30	पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	9.30 से 10.30	प्रवचन : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल
	10.45 से 11.30	विभिन्न कक्षाएं
दोपहर	2.00 से 2.30	सी.डी. प्रवचन : बाबू युगलजी
	2.30 से 3.00	छात्र प्रवचन
	3.00 से 3.45	व्याख्यानमाला
	4.00 से 5.00	विभिन्न कक्षाएं
सायं	6.30 से 7.15	कक्षा - गुणस्थान विवेचन
	7.15 से 7.45	जिनेन्द्र भक्ति
	8.00 से 8.45	प्रथम प्रवचन - आमंत्रित विद्वानों द्वारा
	8.45 से 9.45	प्रवचन - ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना

विधान के आमंत्रणकर्त्ता

- श्री प्रकाशचंदजी छाबड़ा, सूरत
- श्री वीरेशजी सम्यक्जी कासलीवाल, सूरत
- भरतभाई मेहता, सूरत

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता

श्री प्रेमचंद-सुनीता, तन्मय-ध्याता बजाज, कोटा

निवेदक :

सुशीलकुमार गोदिका, अध्यक्ष — डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, महामंत्री

एवं समस्त ट्रस्टीगण, पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर. 302015 (राज.)

0141-2705581, 2707458

नोट : (1) शिविर में पधारने वाले सभी शिविरार्थीयों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था रहेगी, आपके यहाँ से कितने व कौन -कौन भाई बहिन पधार रहे हैं - इसकी सूचना अवश्य देवें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके। (2) रिक्शेवाले को बताने का पता : श्री टोडरमल स्मारक भवन, त्रिमूर्ति जैन मंदिर, कानोडिया कॉलेज के पीछे, ए-4, बापू नगर, गाँधीनगर रोड, जयपुर (3) कार्यक्रम स्थल एवं सम्पर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015, फोन : 2705581, 2707458 फैक्स : 2704127 (4) मुम्बई -जयपुर सुपर फास्ट, भोपाल-जोधपुर पैसेंजर, इन्दौर-जयपुर सुपरफास्ट, इन्दौर-जोधपुर इन्टरसिटी, जबलपुर अजमेर सुपरफास्ट (दयोदय) आदि ट्रेने दुर्गापुरा स्टेशन पर रुकती हैं; इनसे आने वाले यात्री यहीं उतरें एवं खजुराहो-उदयपुर एक्सप्रेस गांधीनगर स्टेशन पर रुकती है, इससे आने वाले यात्री यहीं उतरें।

कृपया आमंत्रण पत्रिका को मंदिरजी या सब देख सकें ऐसे सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगा देवें!

आखिर हम करें क्या?

4

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

ऐसे अनेक लोग हमारे पास आते हैं। उनमें कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आत्मानुभूति नहीं होने पर भी घोषित कर देते हैं कि मुझे (उन्हें) आत्मानुभूति हो गई है। दश-पाँच लोग उनके चक्कर में आ जाते हैं। उनका एक गुट बन जाता है और उनकी दुकान चलने लगती है।

उन्हें न तो आत्मा का सही स्वरूप ही ज्ञात होता है और न यह पता होता है कि आत्मानुभूति का स्वरूप क्या है? आत्मानुभव प्राप्त होने की प्रक्रिया क्या है और उसका क्रम क्या है; आत्मानुभूति सम्पन्न व्यक्ति का आचरण-व्यवहार कैसा होता है?

उन्हें जिनागम का यथोचित् अभ्यास भी नहीं होता।

ऐसे लोगों के लिये मैंने 'ध्यान का स्वरूप' एवं 'रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का' नामक कृति में बहुत कुछ स्पष्ट किया है।

'मैं कौन हूँ' नामक कृति में भी उक्त विषय के सन्दर्भ में लिखे गये पाँच लेख छपे हैं।

आत्मानुभव की रुचि रखनेवाले आत्मार्थियों को उक्त कृतियों का आलोड़न अवश्य करना चाहिये।

उक्त सन्दर्भ में मैंने अभी-अभी द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान की जयमाला में भी लिखा है, जो इसप्रकार हैं -

(रेखता)

अरे निज आतम को पहिचान आतमा में अपनापन करें।
अरे अपने आतम को जान उसी में अपनेपन से जमे।।
यही है निश्चय सम्यग्दर्श यही है निश्चय सम्यग्ज्ञान।
रतन त्रय शामिल हो जाते करो यदि इक आतम का ध्यान।।१०।।

काय चेष्टा कुछ भी मत करो और कुछ भी ना बोलो बोल।
और ना कुछ भी सोचो भाई! एक आतम में रमो अमोल।।
यही है निश्चय सम्यग्ज्ञान यही है निश्चय सम्यक् ध्यान।
यही है परम शुद्ध उपयोग यही है अद्भुत कार्य महान।। ११।।

यही है परम समाधीयोग यही है परमतत्व की लब्धि।
यही है आतम की संवित्ति यही है आतम की उपलब्धि।।
यही है परम भक्ति का भाव यही है निर्विकल्प आनन्द।
यही है परम समरसीभाव यही है परमशुद्ध आनन्द।। १२।।

यही है परम शुद्धचारित्र यही है स्वसंवेदन ज्ञान।
यही है स्वस्वरूप उपलब्धि यही है परमशुद्ध विज्ञान।।
यही है दिव्यध्वनि का सार यही है परमतत्त्व का बोध।
जगत में इसके बिन कुछ नहीं यही एकाग्र चित्त का रोध।। १३।।

यही एकाग्रचित्त का रोध यही है अपनेपन का बोध।
यही है उपयोगी उपयोग यही है योगिजनों का योग।।
इसी को कहते हैं सब लोग मिला है यह अद्भुत संयोग।
स्वयं को जानो मानो जमो यही है परमतत्त्व का बोध।। १४।।

स्वयं को जानो, जानो नहीं जानना होने दो तुम सहज।
जानने का तनाव मत करो जानते रहो निरन्तर सहज।।
अरे करने-धरने का बोझ उतारो हो जावो तुम सहज।
जानने के तनाव से रहित जानना होने दो तुम सहज।। १५।।

जानना होने दो तुम सहज जानने के विकल्प से पार।
और तुम हो जावो निर्भार भाड़ में जानो दो तुम भार।।
भाड़ में जाने दो तुम भार करो तुम अपने में निर्धार[1]।
यदि बनना चाहो भगवान उन्हीं-से[2] हो जावो निर्भार।। १६।।

उन्हीं-से हो जावो निर्भार उन्हीं-से हो जावो निर्ग्रन्थ।
चाहते हो तुम भव का अंत शीघ्र ही छोड़ो जग का पंथ।।
सहजता जीवन का आनन्द यही है परमागम का पंथ।
चलो तुम परमागम के पंथ शीघ्र आवेगा भव का अंत।। १७।।

शीघ्र आवेगा भव का अन्त प्रगट होगा आनन्द अनन्त।
ज्ञान-दर्शन भी होंगे नंत वीर्य भी होगा अरे अनन्त।।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अरे भोगोगे काल अनन्त।। १८।।[3]

उक्त छन्दों में अत्यन्त स्पष्ट रूप से कहा गया है कि - आत्मध्यान में, परमसामायिक में यद्यपि कुछ करना नहीं है, कुछ बोलना भी नहीं है, कुछ सोचना भी नहीं है; तथापि जानना तो सहज होता ही रहता है, होता ही रहेगा; अतः यह सोचना सही नहीं है कि जब करना, बोलना, सोचना सब कुछ बन्द करना ही ध्यान है तो फिर ध्यान में होगा क्या? क्या आत्मा निराश्रय नहीं हो जायेगा, निठल्ला नहीं हो जायेगा?

नहीं होगा, न निराश्रय होगा, न निठल्ला होगा; क्योंकि सहज जानना तो होता ही रहेगा। जानना आत्मा का सहज

१. सोच-समझकर निश्चित करना २. उनके समान ही
३. द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान जयमाला, पृष्ठ-४२-४३

स्वभाव है; वह तो निरन्तर होता ही रहता है।

काया से कुछ करना, वाणी से कुछ बोलना और मन से सोचना - ये सब तो पुद्गल की पर्यायें हैं, पुद्गल के कार्य हैं।

काया से कुछ करना आहारवर्गणा का कार्य है, वाणी से कुछ बोलना भाषावर्गणा का कार्य है और सोचना मनोवर्गणा का कार्य है। आत्मा का कार्य तो जानना-देखना है, जो क्रमशः ज्ञान-दर्शन गुण की पर्यायें हैं।

आहारवर्गणा, भाषावर्गणा और मनोवर्गणा - ये सभी पुद्गल की पर्यायें हैं। पुद्गल द्रव्य अजीव द्रव्य है, जो जीव से एकदम भिन्न है। अपने आत्मा से एकदम भिन्न है। अपने आत्मा और इन पौद्गलिक वर्गणाओं के बीच अत्यन्ताभाव की वज्र की दीवार है। इनका कर्त्ता-धर्त्ता आत्मा नहीं है।

इसपर वह कहता है कि जानने का काम तो करें। जानने के लिये भी तो यह निर्णय करना होगा कि किसको जानें, किसको न जानें?

अनादिकाल से यह आत्मा पर को जानने में लगा है। पर को जानना छोड़कर उसे अपने को जानने में लगावें। इसके लिये भी तो कुछ करना पड़ेगा, एक आसन पर स्थिर होकर बैठना होगा, कुछ सोचना-विचारना होगा, कुछ समझ में नहीं आया तो किसी से कुछ पूँछना होगा; पर आप तो कहते हैं कि कुछ चेष्टा भी मत करो, कुछ बोलो भी नहीं और कुछ सोचो भी नहीं।

अरे भाई! यह सब हम थोड़े ही कह रहे हैं। यह सब तो ध्यान का स्वरूप स्पष्ट करते हुये वीतरागी मुनिराज स्वयं कह रहे हैं।

यह सब बातें तो द्रव्यसंग्रह की मूल गाथा में है। एक हजार वर्ष पहले प्राकृत भाषा में लिखी गई मूलगाथा में यह सब लिखा है। असली ध्यान में; करना, बोलना, सोचना - यह सब कुछ है ही नहीं।

ध्यान की पूर्व भूमिका में यद्यपि यह सब होता है; तथापि ध्यान की वास्तविक स्थिति में यह कुछ नहीं होता।

ध्यान तो एकमात्र जानने रूप ही है। जानना ज्ञान है और जानते रहने का नाम ध्यान है, लगातार जानते रहने का नाम ध्यान है। ज्ञान की स्थिरता ही ध्यान है।

जब भी समाधि की बात आती है तो हमारा ध्यान समाधिमरण की ओर चला जाता है और हम मरण के बारे में ही सोचने लगते हैं।

समाधि का अर्थ तो समताभाव होता है, स्वयं में जमा जाना होता है। यदि यह समताभाव मरण के समय हो, मरण के समय हम स्वयं में समा जाँय तो उसे हम समाधिमरण कह देंगे।

अरे, भाई! समाधि तो जीवन का स्वरूप है। हमें तो समाधिपूर्वक जीना है। हमारा जीवन समाधिमय होना चाहिये, समताभावमय होना चाहिये। यह समताभाव मरण के समय भी बना रहे तो और भी अच्छी बात है।

यह साम्यभाव ही सच्चा धर्म है, वीतरागभाव है।

आचार्य कुन्दकुन्द प्रवचनसार में मंगलाचरण के बाद तत्काल कहते हैं -

'उवसंपयामि सम्मं जत्तो निव्वाणसंपत्ती।'[१]

निर्वाणपद दातार समताभाव को धारण करूँ।

मैं उस साम्यभाव को प्राप्त करता हूँ, जिससे निर्वाण की प्राप्ति होती है। **(क्रमशः)**

१. आचार्य कुन्दकुन्द : प्रवचनसार गाथा ५ का उत्तरार्द्ध

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें। यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें। **- महामंत्री**

स्वीकृति भेजने का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर** 302015 **(राज.)**
फोन नं.-0141-2705581, 2707458,
9785645793 **(नीशू जैन)**
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ज्ञानगोष्ठी संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ देशभूषण कुलभूषण छात्रावास की द्वितीय ज्ञानगोष्ठी दिनांक 30 जून को **षट् आवश्यक** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती उषाबेन काला मुम्बई ने की। निर्णायक के रूप में श्री अशोकजी जैन मुम्बई, श्री कुलभूषणजी जैन, श्रीमती कंचन जैन, श्रीमती शिल्पी जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान सिद्धेश जैन ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण वेदांत जैन ने एवं संचालन पण्डित शुभमजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 7 जुलाई को तृतीय ज्ञानगोष्ठी **णमोकार मंत्र : एक अनुशीलन** विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाशजी जोगी एवं मुख्य अतिथि श्री ऐनकुमार जैन थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शुभमजी शास्त्री, श्री कुलभूषणजी जैन, श्रीमती कंचनजी जैन, श्रीमती शिल्पीजी जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान निशांत जैन, शिरपुर ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण पार्श्व जैन ने एवं संचालन अक्षत जैन बुलढाणा व अनुराग जैन औरंगाबाद ने किया।

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

● दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

● अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें।

संपर्क सूत्र - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग,**
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर
(राज.) 302015 फोन नं.- 0141-2705581,
2707458, मो. 9785645793 (नीशू जैन)
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
26 अग. से 2 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण

बाल संस्कार शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर सेक्टर-7 स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 15 से 23 जून तक 21वें बाल संस्कार शिविर का आयोजन श्री नथमलजी झांझरी परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित मनीषजी कहान, पण्डित परेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना एवं श्रीमती वर्षा जैन द्वारा प्रवचन व कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में अनेक बच्चों सहित साधर्मियों ने तत्त्वज्ञान का लाभ लिया।

शोक समाचार

(1) बारां (राज.) निवासी श्री ऋषभचंद जैन पुत्र श्री कस्तूरचंद का दिनांक 19 अप्रैल को देहावसान हो गया। आप अ.भा. जैन युवा फैडरेशन बारां के मंत्री थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) उदयपुर (राज.) निवासी श्रीमती केशरीदेवी बण्डी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीलालजी बण्डी का दिनांक 24 जून को 81 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2000/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) चेन्नई निवासी श्री नवनीतभाई पी. शाह का दिनांक 20 जून को देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, विद्वानों के प्रवचन हेतु अलग से हॉल बुक करवाते थे।

(4) रतलाम (म.प्र.) निवासी आनंदकुमारजी अजमेरा का दिनांक 2 जुलाई को देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप शाश्वतधाम के ट्रस्टी श्री राजकुमारजी अजमेरा के पिताजी थे। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं तत्त्वरसिक थे।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com